मैं किसी का आदमी नहीं, मेरा कोई नहीं, मैं निर्गुट हूं

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

हमारा हीरो - अजीत अंजुम : मैनेजिंग एडीटर, न्यूज **24**

"हां, मैं थोड़ा एरोगेंट, शार्ट टेंपर्ड हूं : असलियत सिर्फ वही नहीं जो सामने है : सरकार तो चाह रही कि सारे चैनल दूरदर्शन बन जाएं :
लोकसभा टीवी पर देश की सबसे ज्यादा चिंता की जाती है पर उसे कितने लोग देखते हैं :
मैं मैनेजर नहीं, प्रोड्यूसर हूं :
दिमाग में टीआरपी, दिल में देश और समाज है :
"

-शुरुआत बचपन से करिए। जन्म, शिक्षा और पत्रकारिता में आने के सपने के बारे में बताएं।

-बिहार के बेगूसराय शहर में 8 अप्रैल 1966 को पैदा हुआ। सात साल की उम्र से ही बिहार के विभिन्न शहरों में टहलता रहा। वजह, पिता जी जूडीशियरी अफसर रहे, जिनका तबादला कभी हजारीबाग, कभी छतरा, कभी दरभंगा, कभी मुजफ्फरपुर होता रहा और उनके साथ हम लोग भी घूमते रहे। मुजफ्फरपुर के एलएस कालेज में ग्रेजुएशन करने के दौरान ही पत्रकारिता की तरफ रुझान हुआ। तब लेटर टू एडीटर लिखने लगा था। जब छपने लगा तो लिखने की आदत ऐसी पड़ी कि फिर पढ़ाई में मन नहीं लगा। पटना के **पाटलीपुत्र टाइम्स** में छपने लगा था। मुजफ्फरपुर के मीनापुर कस्बे का मैं संवाददाता बन गया और मुजफ्फरपुर में बैठकर खबरें मीनापुर डेटलाइन से लिखा करता था। बीए फर्स्ट इयर में ही पत्रकारिता का यह नशा चढ़ चुका था। किसने क्या लिखा, किसका क्या छपा ...देखने के लिए हर रोज सुबह-सुबह हम लोग कल्याणी चौक इकट्ठा होते थे। उन दिनों पटना में नभाटा के संपादक **दीनानाथ मिश्र** थे। तब कैंपस रिपोर्टर रखने की शुरुआत हुई। मुजफ्फरपुर के एलएस कालेज का कैंपस रिपोर्टर मुझे बनाया गया। 1984 से 87 तक ग्रेजुएशन करने के बाद 1987 में

1 / 5

मैं किसी का आदमी नहीं, मेरा कोई नहीं, मैं निर्गुट हूं

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

पत्रकारिता में बहुत कुछ करने का सपना लिए ड्रीम सिटी पटना पहुंचा।

-क्या आपका शुरू से नाम अजीत अंजुम था या अंजुम शब्द बाद में जुड़ा।

-आज जो नाम है वह छठवीं बार के बदलाव से पैदा हुआ। सबसे पहले नाम था **अजीत कुमार सिंह।** फिर **अजीत कुमार। अजीत कुमार अभिषेक**। **अजीत कुमार अकेला**। **अजीत कुमार अंजुम**। इसमें से कुमार इसलिए हटाना पड़ा क्योंकि बाइलाइन के वक्त नाम बड़ा होने की शिकायत एक वरिष्ठ पत्रकार साथी ने कर दी। छठीं बार जो नाम रखा वही स्थायी हुआ। मेरे नाम बदलने से घर वाले काफी नाराज होते थे। लेकिन मुझे जो करना था वो मैंने किया।

-जब आप सन 87 में अपने सपनों के शहर पटना संघर्ष करने पहुंचे तो वहां क्या रिस्पांस मिला ?

-पटना में जितने बड़े नाम हुआ करते थे, उन जैसा बनने का ख्वाब लिए पटना पहुंचा। उन दिनों के जो बड़े नाम थे, जिनसे मैं प्रभावित रहता था, वो हैं- **अरुण रंजन, विकास कुमार झा, सुरेंद्र किशोर, जयशंकर गुप्त, उर्मिलेश, वेद प्रकाश वाजपेयी, हेमंत, श्रीकांत, सुरेंद्र किशोर**। ये लोग जैसा लिखते थे, सिस्टम के खिलाफ अपनी लेखनी से बिगुल बजाया करते थे, वो काफी प्रभावित करता था मुझे। ये एग्रेसिव जर्नलिज्म का दौर था, उसके जो हीरो थे, उसी जैसा बनने पटना आया। दिल्ली जाने की बात तब मेरी सोच में नहीं थी। ड्रीम सिटी पटना का हिस्सा बनने के बाद पता चला कि हकीकत ज्यादा चट्टानी है। अपने जैसे संघर्षशील लोगों की पटना में संगत बनने लगी। इसमें अभि मनोज, विकास मिश्रा, रवि प्रकाश, हरि वर्मा, विकास रंजन आदि थे। हम सभी स्थापित पत्रकारों के समानांतर खड़े होने की कोशिश करने लगे। होटल पिंटू के बाहर पत्रकारों - संपादकों की जुटान होती थी तो हम लोगों ने अड्डा हुंकार प्रेस के बाहर चाय की दुकान पर जमाया। यहीं सभी लोग चंदा कर शराब और अंडा मंगाते थे। मैं शराब पीता नहीं, इसलिए अपना हिस्सा ज्यादा अंडे खाकर पूरा करता था। इस जुटान से हम लोगों में अजनबीपन और एकाकीपन खत्म हुआ। आत्मविश्वास बढ़ा। पटना कुल दो साल रहा। 87 से 89 तक। समझ में आया कि जितनी भी अखबार-मैग्जीनें हैं, **धर्मयुग**, **दिनमान**

2 / 5

,
□□□□□□

,
□□□□□□□

, उनका मुख्यालय दलि्ली-मुंबई है□ पटना में सरि्फ फ्रीलांसगि संभव है□ इसमें भी तगड़ा कंप्टीशन□ बहिार में नरसंहार बहुत हआ करते थे□ इसकी कवरेज पहले भेजने की होड़ होती थी□ □क नरसंहार पर खबरों के कई पैकेट मैग्जीनों के मुख्यालय कुरयिर से भेजते थे□ जनिका पहले पहुंचता, उनका छपता था□ मशहूर फोटोग्राफर कृष्ण मुरारी कशिन के भाई और प्रतभिावान फोटोग्राफर कृष्ण मोहन शर्मा के स्कूटर पर बैठकर नरसंहार स्थल जाता था□ इतना पैसा कहां था कि खुद जा पाते□ वहां से रपिोर्ट तैयार कर लाते और कुरयिर से फटाफट भेज देता□ तीन बड़ी मैग्जीनों में लखिने वाले हम 13 लोग थे□ जसि दनि मैग्जीन को पटना में आना होता था, उस दनि बेचैन रहते थे□ दनिमान में □क रपिोर्ट मेरी प्रकाशति हुई,
□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

नाम से□ तस्वीर के साथ□ ऐसे कुल तीन चार लेख छपे□ □क अखबार
□□□□□□□

नाम का छपता था पटना से□ अखबार का कैचलाइन था-
□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□

□ सोच में □ग्रेसवि अखबार था□ इसके लि□ पटना के गांधी मैदान के पास स्लम पर स्टोरी की□ 25-30 पेज का लेख लखिा□ लेख इस अखबार के रववािसरीय में छपा□ फुल पेज का शेष पेज अंदर था□ कुल डेढ़ पेज□ फोटो भी खुद खींचे थे□ संपादक को पसंद आया तो उन्होंने हर रववािर लखिने को कह दयिा□ इसके 50 रुपये मलिते थे□ उन्हीं दनिों
□□

अखबार में कुछ लोगों की बहाली होने की सूचना मलिी□ ट्राई करने मैं भी पहुंचा□ वहां पहुंचा तो जनि्होंने इंटरव्यू लयिा उन्होंने केवल तीन सवाल पूछे- जात कि्या है, नाम क्या है, जलिा कौन सा है□ मेरा सेलेक्शन नहीं हुआ□ दूसरे साथी को उन्होंने रख लयिा□ शायद उसकी जात उन्हें सूट कर गई□ बताया गया कि उन्हें भूमहिारों से चढ़ि है□ मैं सोचता रहा कि उन्हें कसिी □क भूमहिार से दक्कित हुई तो सबको दुश्मन क्यों मान लयिा? घर से मेरे पर प्रेशर पड़ने लगा□ बैंक में क्लर्क बन जाओ, पीओ बन जाओ पर ये पत्रकारति छोड़ो□ पत्रकारों की जो इमेज मेरे परविार में थी वो वही थी जो उन दनिों जलिे के पत्रकारों की स्थतिि थी□ सीमेंट, कोयला, राशन का परमटि लेकर बेचते थे और इसी से पैसा कमाते थे□ पत्रकारति से तो उन्हें कुछ मलिता नहीं था□ पति जी मेरे सपोर्ट में थे□ वे मुझे अपने हसिाब से करने की छूट देते थे□ घर से पैसे वगैरह भी मलि जाते थे□ दो साल में पटना में रहने के बाद लगा कि यहां कुछ खास नहीं होने वाला है□ उन्हीं दनिों गुवाहाटी से उत्तरकाल नामक □क अखबार नकिलने की तैयारी हो रही थी जसिके लि□ पत्रकारों का चयन पटना में कयिा जा रहा था□ इसके लि□ हम सात लोग चुने ग□□ 900 रुपये में नौकरी मलिी□ गुवाहाटी पहुंच ग□□ रहने के लि□ फ्लैट भी अखबार ने दे दयिा□ अखबार के संपादक
□□□□□□□□□□

हुआ करते थे□ हम जो सात लोग वहां ग□ उनमें
□□ □□□□□□ □□□□

,
□□□□□□ □□□□□

आदि थे□ हम सब □क ही फ्लैट में रहते थे□ अखबार का मालकि सीमेंट कारोबारी था और उसका बर्ताव घटयिा कसि्म का था□ वहां पता चला कि हम लोगों को अखबार के लि□ वज्ञिापन भी लाना पड़ेगा□ डेढ़ महीने बाद ही मैने नौकरी न करने का ऐलान कर दयिा□ उधर, जब हम लोग पटना से गुवाहाटी चलने को हु□ थे तो मेरे घर पर पूजा पाठ कर आवारा बेटे के लायक बनने की घोषणा कर दी गई और इधर नौकरी छोड़कर फरि पहले वाली स्थतिि में पहुंच गया था□ दरअसल मैं थोड़ा रि□क्शनरी कसि्म का हूं□ गुवाहाटी में उम्र में तो सबसे छोटा था पर सब

मैं किसी का आदमी नहीं , मेरा कोई नहीं , मैं निर्गुट हूं

Written by यशवंत सहि
Monday, 01 September 2008 02:01

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4 / 5

मैं किसी का आदमी नहीं , मेरा कोई नहीं , मैं निर्गुट हूं

Written by यशवंत सिंह
Monday, 01 September 2008 02:01

[illegible]

[illegible]

[illegible] ajitanjum@bagnetwork.in [illegible]

5 / 5